ISSN : 2278-4632

JUNI KHYAT
जूनी ख्यात

इतिहास, कला एवं संस्कृति की शोध पत्रिका

संपादक

डॉ. बी.एल. भादानी

सम्पादकीय परिषद

Chief Editor (Vyakarana and Darsana)
Dr. Saroj Gupta
Associate Professor
Department of Sanskrit
Satyawati College(M), Delhi University,
Delhi

Associate Editor
Dr. Mrs Raju S. Bagalkot
Associate Professor and Research Guide
Department Of Hindi, Karnataka State
Akkamahadevi Women's University
Torvi,Vijayapura-586108

Editors
Dr. Aditya Angiras
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Vishveshvaranand Vishwa Bandhu Institute
of Sanskrit and Indological Studies
Punjab University/Hoshiarpur – 146001,
Punjab

Dr. Shyam Deo Mishra
Assistant Professor & Co-ordinator (Jyotish)
Mukta Swadhyaya Peetham (Institute of
Distance Education)
Rastriya Sanskrit Sansthan, Janakpuri,
New Delhi – 110058

Dr.(Smt) Sudha Gupta
Associate Professor
Department of Sanskrit
Juhari Devi Girls P.G. College,
Kanpur – 208004

Dr. Mamta Gupta
Assistant Professor Sanskrit
Government PG College,
Maihar, Satna MP

Dr. Shuchita Dalal
Professor & Head
Post Graduate Department of Sanskrit
Rashtrasant Tukdoji Maharaj Nagpur
University, Nagpur (Maharashtra)

Dr. Kapil Gautam
Additional Examination Controller
Assistant Professor & Convener
Sanskrit Deptt.(Jyotish & Karmkand),
Vardhman Mahaveer Open University, Kota
(Rajasthan)

Dr.Ravi kumar Shastri
Assistant Professor
Department of Yoga
J.J.T. University, Jhunjhunu, Raj.

Dr. Asheesh Kumar
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Rajdhani College, University of Delhi, India

Dr. Prasad Gokhale
Assistant Professor
Department of Vedang Jyotish
K.K.Sanskrit University,
Ramtek, Nagpur, Maharashtra.

Dr. Dinakar Marathe
Assistant Professor
Department of Vedang Jyotish
K.K.Sanskrit University,
Ramtek, Nagpur, Maharashtra.

Dr.Manoranjan Senapaty
Reader & Head,
P. G. Department of Sanskrit,
Utkal University, Vani Vihar,
Bhubaneswar, Odisha – 751007

ISSN: 2278-4632
Vol-11 Issue-01 No.02 January 2021

विभेत्यपश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।"[1]

पुराण शब्द का व्युत्पत्तिगत अर्थ है "पुरा भवं पुराणम्"। पुराण के पाँच लक्षण मत्स्य पुराण में बताया गया है। जैसे–

"सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।

वंशानुचरितं चैव पुराणं पंचलक्षणम"[2]

अर्थात् सर्ग (सृष्टि), प्रतिसर्ग (ध्वंस के बाद पुनः सृष्टि), वंश (देवता एवं ऋषिओं का वंश वर्णन), मन्वन्तर (एक एक मनु का शासन–काल), वंशानुचरितं (विभिन्न राजवंशों का इतिहास)। इसके अतिरिक छः गौण लक्षण प्राप्त है– (1) भुवन विस्तार (2) दानधर्म विधि (3) श्राद्धकल्प (4) वर्णाश्रम विभाग (5) इष्टापूर्त एवं (6) देवता प्रतिष्ठा। पुराण अष्टादश है। इसमें से भविष्यपुराण में आधुनिकता का विस्तार होने पर भी यह पुराण भी अत्यन्त प्राचनी है। भविष्य पुराण में भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन है। समय समय पर विभिन्न ऋषियों द्वारा घटित होने वाली विषयों को जोड़ दिया गया है। इसलिए यह पुराण अब साम्प्रदायिक पुराण बन गया है। भविषय पुराण आज विभिन्न इतिहास का साक्षी स्वरूप है। अब यह प्रश्न मन में उठता है कि इसका नामकरण कैसे हुआ है। साहित्य नामकरण की विशेषता यह कि नामकरण यथार्थ होनी चाहिए। चाहे वह पृथिवी के कोई भी साहित्य हो। संस्कृत साहित्य भी इसका व्यतिक्रम नही है। वर्तमान घटना प्रवाहों के परिप्रेक्षित में काव्यकृति या साहित्यकृति का नामकरण होनी चाहिए। इस नामकरण के माध्यम से पाठकगण आलोच्य विषयों को हृदयङ्गम कर पाता है। भविष्य पुराण नामकरण की सार्थकता विचार करते हुए भविष्य पुराण में वर्णित कुछ मुख्य विषयों का आलोकपात करनी चाहिए। जैसे कि यह पुराण अत्यन्त उच्चकोटि का ग्रन्थ माना जाता है क्योंकि इस पुराण का विषय वस्तु, वर्णनशैली, रचनाशैली साहित्यकृति तथा काव्य–रचना अत्यन्त रोचक एवं प्रभाव उत्पादक है। भविष्य पुराण में चार पर्व है– ब्राह्म, मध्यम, प्रतिसर्ग तथा उत्तर पर्व है। भविष्य पुराण के प्रतिसर्ग पर्व के वर्तमान घटना प्रवाहों के परिप्रेक्षित में भविष्य पुराण नामकरण सार्थक विचार किया जाता है।

भविष्य पुराणः–

भारतीय संस्कृति का धारक एवं वाहक रूप में पुराण साहित्य को माना जाता है। इस पुराण में सामाजिक उपकार, आध्यात्मिक–ज्ञान, संस्कृति एवं धार्मिक विधान सम्यक रूप से प्राप्त होता है। इस कारण से पुराण साहित्य को भारत के अमूल्य निधिः माना गया है। कहा भी गया है कि – "पुरा नवं भवति इति पुराणम्।" अष्टादश पुराणों में से भविषय पुराण का स्थान अत्यन्त उच्चकोटि का है। भविष्य पुराण चार पर्व में विभाजित है। यह पुराण सूर्योपासना का महत्व को प्रतिपादित करता है। इसलिए इसे 'सोरग्रन्थ' भी कहा गया है। भविष्य पुराण को भारतवर्ष के समस्त आधुनिक इतिहास का मूलग्रन्थ माना गया है। इसलिए भविष्य पुराण के संज्ञा देते हुए कहा गया है कि भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन जिसमें है उसे भविष्य पुराण कहा जाता है।

अष्टादश पुराणों का संक्षिप्त वर्णनः–

INDEX

S.No.	TITLE	Page No.
1	TECHNIQUES OF ENGLISH SPEAKING SKILLS	1
2	TO STUDY THE WORK LIFE BALANCE OF LOW LEVEL FEMALE EMPLOYEES IN A PRIVATE SECTOR FMCG COMPANY BASED IN SEMI URBAN PUNE AREA WITH SPECIAL REFERENCE TO THE "NEW NORMAL"	6
3	STRESS STABILITY STUDY SHOWING EFFECT of ACID, BASE, H_2O_2 AND DRY HEAT ON PRULIFLOXACIN BY HPTLC METHOD	15
4	MINDFULNESS AS AN EMERGING TOOL FOR EFFECTIVE MANAGERIAL FUNCTIONING	22
5	EXPLORING THE ROLE OF SELF-CONCEPT AND EMOTIONAL MATURITY IN THE DEVELOPMENT OF ADOLESCENTS DURING THE PANDEMIC COVID-19	28
6	LEADERSHIP LESSONS FROM SHIVA TRILOGY	38
7	FORMULATION OF MICROSPHERE DRUG DELIVERY SYSTEM: A REVIEW	42
8	महिलाओं का पारिवारिक तथा सामाजिक सशक्तिकरण और शिक्षा	53
9	अष्टादश पुराण अन्तर्गत भविष्यपुराण एवं नामकरण की सार्थकताः एक समीक्षा।	62
10	"प्राचीन भारत में नगरीय सरकारें"	70
11	ELECTRONIC RESOURCES MANAGEMENT AND USE IN ACADEMIC COLLEGES AFFILIATED TO RASHTRASANT TUKADOJI MAHARAJ NAGPUR UNIVERSITY, NAGPUR	75
12	पूर्वमध्य कालीन भारत में विदेशी व्यापार	79
13	RIGHT TO PRIVACY AND DATA PROTECTION IN INDIA	85
14	LEVEL OF STRESS AND PERSONALITY PATTERN OF DIABETIC AND NON-DIABETIC PEOPLE	89
15	**RELEVANCE** OF GANDHIAN THOUGHTS IN PRESENT SCENARIO	95
16	ANTIOXIDANT ACTIVITY, TOTAL PHENOLIC CONTENT AND INVESTIGATION OF IMPORTANT NUTRIENTS OF SOME WILD VEGETABLES OF MAHARASHTRA	99
17	STUDY OF BIOACTIVE COMPONENTS FROM BACOPAMONNIERI AGAINST MICROORGANISM : A REVIEW	105
18	पंकज विष्ट की कहानियों में चित्रित वृद्धों की समस्या	109
19	स्त्रीः देह मुक्ति का सवाल (समकालीन हिन्दी कहानी के संदर्भ में)	113
20	शिवकालीन महसूल प्रशासन व्यवस्था	120
21	EXTRACTION, ISOLATION AND PHYTOCHEMICAL ANALYSIS OF ALOE VERA: A REVIEW	124